ॐ

सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के

संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख

(भाग-1)

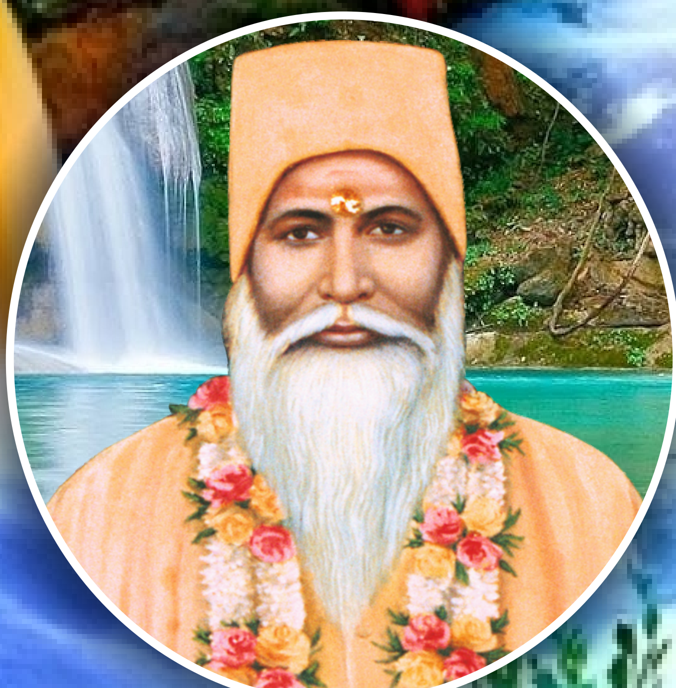

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ

सत्‌नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के

संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख

(भाग-1)

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक व पुरोधा

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

परब्रह्म परमात्मा की घोषणा है कि जब जब धर्म का विनाश होने लगता है, तब-तब मैं अनेक रूपों में प्रकट होता हूँ ! भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण आदि पूर्णावतार और संत-महात्मा साक्षात् धर्म के अवतार होते हैं और इन्हीं साक्षात् धर्म के अवतारों में श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक **'आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** भी एक सिद्ध संत हैं !

यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोसमीपे बत धर्म हानिम्।
जनाञ्च सर्वान व्यथितान विलक्ष्यः, श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार।।

आचार्यश्री का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् १९४४ को आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि, शनिवार (**सन्** 1887) के दिन अमृत वेला धर्ममयी माता कृष्णादेवी व पिता श्री चेलाराम के घर हुआ ! आचार्यश्री के अवतरण के समय चारों ओर शीतल मन्द सुगन्धित पवन चल रही थी ! आनन्द की लहरें उठकर, वर्षा की नन्ही बूंदें, पुष्पों के रूप में बरस रही थीं, प्रकृति ने अपना पूरा आनन्द बिखेर कर वातावरण स्वर्ग के समान कर दिया ! कुल-पण्डित आचार्य श्री जयराम जी ने ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की **"बच्चा होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा।"** नामकरण संस्कार में आचार्यश्री का नाम **'टेऊँराम'** रखा गया !

निर्गुण पूर्ण पारब्रह्म, जो सत् चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त हुआ ! माता ने सर्वप्रथम

आपको **'राम'** का नाम बोलना सिखाया ! आपके खेलने का ढ़ँग सबसे अलग था, बच्चों को एकत्रित कर स्वयं नेत्र बन्द कर आसन लगवाकर **'राम-नाम'** की धुनि लगाया करते थे, जिससे पूरा वातावरण ही **'राम-मय'** हो जाता था !

आपका चित्त तो सदैव ईश्वर-भक्ति में ही रहता था ! प्रतिदिन नदी किनारे अथवा एकांत में जाकर ईश्वर का ध्यान करते रहते, भूख-प्यास से बेखबर अपनी ही मौज में रहकर विचार करते कि मुझे इस संसार सागर से उस पार अर्थात् परमात्मा की ओर जाना है ! परमात्मा की ओर जाने में मोह, ममता बाधक बनी हुई है, इन सबका त्याग करके परमात्मा की ओर जाने के लिये सत्पुरुषों का मार्गदर्शन लेना होगा ! कर्म करते हुए मन में यही इच्छा है कि मैं **'परमात्मा'** को **'प्यारा'** लगूँ, मात्र 14 वर्ष की अवस्था में आपने **स्वामी आसूराम जी महाराज** से गुरु दीक्षा प्राप्त की ! आपने गुरुदेव के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास, दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त की !

सत्गुरु के युग चरण की, सेवा करि निष्काम।
स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।

अपने सदुपदेशों में गुरु महाराज जी कहते थे कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है ! कुदरत ने इस पृथ्वी पर करोड़ों जीव-जन्तु पैदा किये हैं, उनमें केवल मनुष्य ही अलग-अलग धर्मों में बंटे हुए हैं ! क्या पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों में धर्म का विभाजन हुआ है ? जब उनमें धर्म का विभाजन नहीं हुआ है तो मनुष्य ने क्यों अपने को अलग-अलग धर्मों में बाँट रखा है ! प्रकृति के सभी नियम जैसे गर्मी, सर्दी, वर्षा सभी धर्मों में एक से लागू हैं तो फिर मनुष्य जाति क्यों धर्म के नाम पर अलग-अलग बंटी हुई है !

श्री गुरु महाराज जी द्वारा ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि उनके अनुयाइयों में हिन्दू-मुस्लिम आपस में प्रेम-पूर्वक रहने लगे !

सत्य-मार्ग पर लोगों को राह दिखाने हेतु गुरु महाराज जी ने संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम **'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल'** रखा ! एक बार अपनी सन्त-मण्डली के साथ देशाटन करते गुरु महाराज जी सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रुके. इस घने जंगल में जगह-जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर-सेवा करके 20-25 झोपड़ियों व सत्संग स्थल का निर्माण कर **'श्री अमरापुर स्थान'** की स्थापना की ! यह स्थान डिब़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ !

श्री गुरु महाराज जी ने अपने मूल मंत्र **'सत्नाम साक्षी'** को प्रणाम-मन्त्र के रूप में

भक्तों को आत्म-सात् करने की दीक्षा दी ! **'सत्नाम साक्षी'** महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है ! **'प्रेम प्रकाशी'** एक दूसरे का अभिवादन **'सत्नाम साक्षी'** के सम्बोधन से ही करते हैं !

सद्गुरु महाराज जी ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि सभी को सद्बुद्धि दो ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हुए, सच्चे कर्तव्यों का पालन करते रहें और अपने निश्चित जीवन का सफर शान्ति से पूरा कर सके !

श्री अमरापुर स्थान के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि इस पावन स्थान के दर्शन करने मात्र से मनुष्य की वृत्ति सत्कर्मों की ओर बढ़ती जाती है और इस पावन स्थल पर सत्संग का श्रवण करने से मनुष्य अमर हो जाता है !

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान।
संत समागम पायके, अपना करो कल्यान।।

धर्म के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि धर्म के कारण ही जीवन की उन्नति होती है और सद्गति की प्राप्ति होती है, इसलिए जिस धर्म में जन्म लिया है, उसे कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए ! प्राचीन समय में अपने धर्म की रक्षा के लिए अनेक ऋषि-मुनियों व धर्मात्मा राजा-महाराजाओं ने शीश- न्यौछावर कर दिये !

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
शीश जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं।।

सद्गुरु महाराज जी के उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएँ (कृतियाँ) रची गई हैं, जिनमें प्रमुखतः **''श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ''** है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, सलोकमाला, सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे आदि हैं. श्री गुरु महाराज जी द्वारा रचित भक्ति-भजन, अमरापुर वाणी पुस्तक में संकलित हैं ! जो आज पूरे विश्व में अनन्त जीवों को मार्ग- दर्शित कर रही है !

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर, श्री अमरापुर स्थान।।

इसी प्रकार सत्य सनातन धर्म का प्रचार - प्रसार कर अपनी लीला का संवरण करके

सम्वत् 1999 के पुरुषोतम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को 55 वर्ष की अल्प आयु में आचार्यश्री ने प्रेम प्रकाश आश्रम, हैदराबाद (सिन्ध) में आसन मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा ! उनकी आत्म-ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गई ! पर उनका आलोक आज भी प्रेम- प्रकाशियों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है !

समूचे देश-दुनिया में लाखों प्रेम प्रकाशीगण अनेक शहरों-कस्बों में स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रति सत्संग के माध्यम से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं. देश विभाजन के बाद सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में **'श्री अमरापुर स्थान'** की स्थापना की ! जो आज **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** का **'मुख्यालय'** है. इसी पावन स्थल पर सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का भव्य **'श्री मंदिर एवं समाधि स्थल'** स्थापित है ! जहाँ हजारों श्रद्धालुजन प्रतिदिन आकर अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं !

अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत आलीशान।
जाँका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति और कर्म के अद्भुत उपासक थे ! वैदिक सनातन धर्म की रक्षार्थ श्री गुरुदेव भगवान ने अपने साधना-तप-तपस्या के बल अथवा भक्ति - ज्ञान के प्रचण्ड प्रताप से एक नये निराले पंथ का शुभारम्भ किया ! उनके द्वारा स्थापित **श्री प्रेम प्रकाश पंथ, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, सत्नाम साक्षी महामंत्र, पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान का निर्माण**, विश्व के इतिहास में अमिट है !

मंगलमूर्ति सद्‌गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज

सन्त समाज के सुधारक और जीवों के उद्धारक होते हैं ! भारत वर्ष में सन्तों की एक सुदीर्घ परम्परा है ! इसी अनमोल मौक्तिक माला के एक रत्न सन्त शिरोमणि **सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** हुए हैं ! इनका जन्म विक्रम संवत् 1944 में आषाढ़ शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि (**सन्** 1887) शनिवार को सिन्ध प्रान्त के खण्डू ग्राम में हुआ था ! इनकी माता का नाम कृष्णादेवी और पिता का नाम श्री चेलाराम जी था ! इनके माता- पिता धर्मात्मा और सत्संग प्रिय थे ! अतः बाल्यकाल से ही इन्हें धार्मिक वातावरण प्राप्त हुआ ! अल्पायु में ही पिताका आशीर्वाद और आश्रय से वंचित सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज ने खेती-बाड़ी व व्यापार का कार्य भार भी संभाला था किन्तु वहाँ पर भी संत - महात्माओं को बैठाकर सत्संग गंगा प्रवाहित करवा दी ! जिनका मन परमात्मा में रम गया है, उन्हें भला सांसारिक कार्यों से क्या काम !

अतः इस कालखण्ड में भी वे जीवन भर विरक्त रहकर सन्त सेवा, गो सेवा, अतिथि सेवा और ईश्वर भक्ति में तल्लीन रहते थे ! जब वे सिन्धु नदी के पास तट पर बैठकर योगस्थ होते थे, तो पशु-पक्षी तक भी इनके पास आकर बैठ जाते थे और जब वे इकतारा लेकर ओजस्वी वाणी में सत्संग-भजन-संकीर्तन करते थे, तो सभी जन अपना कार्य छोड़कर वहाँ इकट्ठे होकर ध्यान मग्न हो जाते थे !

स्वामी जी के दीक्षा 'गुरु' **"दादा श्री सांईं आसूराम जी महाराज"** थे. आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज तीस वर्ष की अवस्था में हिन्दू सनातन धर्म की पताका फैलाकर श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की स्थापना कर '**श्री**

अमरापुर स्थान' एवं '**श्री प्रेम प्रकाश आश्रम**' के नाम से सत्संग स्थलों की स्थापना की. सद्गुरु महाराज जी ने '**सत्नाम साक्षी**' महामंत्र की दीक्षा देकर सांसारिक कल्याण हेतु भक्तजनों को सत्मार्ग दिखाया ! इनकी अनुभवी वाणी का विशाल '**श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ**' आध्यात्मिक महाकाव्य है ! जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, भजन, पद व सलोकमाला आदि हैं. इनकी प्रमुख रचना श्री अमरापुर वाणी (भजनमाला) लोक विख्यात है ! सहयोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज परम सिद्ध संत और युगपुरुष थे ! वे **55** वर्ष की अल्पायु में योगस्थ होकर परम धाम को प्राप्त हो गये !

ऐसे परम वैरागी तेजपुंज महापुरुष जिन्होंने जीवों को सत्यमार्ग की राह दिखाकर सभी के कल्याण की कामना की ! ऐसे श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य की इस अलौकिक, दुर्लभ, दिव्य महाविभूति को कोटिशः नमन और वन्दन है !

पावन तीर्थ स्थल : श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का पावन तीर्थ स्थल जयपुर में श्री अमरापुर स्थान (डिब़) के नाम से सुविख्यात है ! इस स्थल पर भव्य श्री मंदिर, ग्रन्थ कक्ष, भगवान श्री लक्ष्मी-नारायण मंदिर, श्री अमरापुरेश्वर मंदिर एवं समाधि स्थल बने हुए हैं ! आज प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु इस पवित्र तीर्थस्थल के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं !

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी :

जिन जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान।
टेऊँ तिनके कदम पर, झुक झुक पड़त जहान।।

कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी और हनुमान।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।

स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान।
टेऊँ समता में रहे, सोई सन्त पछान।।

बुरा किसी का ना करो, सबका भला विचार ।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार ।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित ग्रन्थावली :

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ (795 पृष्ठीय आध्यात्मिक महाग्रंथ),
श्री प्रेम प्रकाश दोहावली (1375 दोहे),
श्री ब्रह्मदर्शनी (250 ब्रह्म पद),
श्री कवितावली-छन्दावली (पद-छन्द),
श्री अमरापुर वाणी (हिन्दी-सिन्धी भजन संग्रह),
सलोक माला (108 सलोक), सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे, अमर कथा आदि अनुभवी वाणी का अमूल्य खजाना 'महाराज श्री' द्वारा रचित है ! जो कि प्रेम प्रकाश आश्रमों में उपलब्ध हैं !

ऐसे युगपुरुष - युगदृष्टा कर्मयोगी को हमारा शत् - शत् नमन् !

!! ॐ श्री सत्नाम साक्षी !!

भक्ति के विशाल व्योम और कर्म उपासक
आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

मनुष्य जन्म से नहीं अपितु कर्म से महान् बनता है ! जिसने अपने अन्तर्गत जाग्रति प्राप्त कर उस मूल तत्त्व को जान लिया, उन्होंने सब कुछ पा लिया ! यह जीव प्रेम, पुरुषार्थ, कर्मशील बनकर मन में सेवा भाव रखे तो शीघ्र ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है और सेवा से जीव अपना भाग्योदय करता है ! सेवा भी भक्तिका ही एक स्वरूप है !

श्री रामचरित मानस में वर्णित नवधा भक्ति को युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने आत्मसात् कर जीवन में अपनाया स्वयं श्री गुरुदेव भगवान ने अपने सत्संग-प्रवचन में भक्ति के विषय पर ये कहा है-

श्रवण, स्मरण, कीर्तन, पद सेवन भगवान।
अर्चन, वन्दन, दास्यरति, सख्य, समर्पण जान।।

नवधा भक्ति में एक भी भक्ति निभाने वाला मोक्ष प्राप्त कर लेता है ! जैसे बलि ने समर्पण भक्ति कर मुक्ति प्राप्त कर ली ! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने तो अनेक साधु संतों की संगत में भगवान के विभिन्न रूपों का श्रवण कर, प्रभु का सदैव स्मरण बाल्यावस्था से ही किया ! सखाओं, भक्तों को संग लेकर भगवान का कीर्तन किया ! भगवान के पद की सेवा, दास्य प्रेम, सखा के भाव रखकर उनकी अर्चना-वन्दना में अपना सब कुछ अर्पित कर दिया ! ऐसे भक्त सदैव अजर-अमर हो जाते हैं ! **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** का जन्म भक्ति-भाव रखने वाले माता-पिता (कृष्णादेवी-श्री चेलाराम) के घर (खण्डू गाँव, जिला हैदराबाद, सिन्ध) में विक्रम सम्वत् 1944 आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी शनिवार के दिन हुआ !

बचपन में ही एकांत में बैठकर बालमण्डली के साथ राम-नाम की धुनि लगाते थे ! 'यकतारे' को लेकर स्वरचित भजन विभिन्न राग- रागनियों में गाते हुए श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देते थे ! भक्त भी सांसारिक व्यवहारों, कार्यों को त्याग कर स्वामी जी के सत्संग में लीन हो जाते थे ! भक्ति सागर में भक्तजन गोते लगाते हुए परब्रह्म के साथ एकाकार हो जाते थे !

अज्ञानवश ही जीव स्वयं और भगवान में भेद करता है, द्वैतभाव रखता है ! आत्म ज्ञान प्राप्ति के बाद जीव ब्रह्म के साथ एकाकार हो जाता है, अद्वैत भाव धारण कर लेता है ! इसके लिए सत्संग और गुरू की आवश्यकता होती है ! कहा भी गया है-

सत्संग से सत्गुरु मिले, सत्गुरु से निज ज्ञान।
कहे टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहिं पद निर्बान।।

भक्ति के विशाल व्योम में "**युगदृष्टा सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज**" जैसे तेज पुँज मंडित नक्षत्र का उदय हुआ और उन्होंने सत्संग की पावन मंदाकिनी में लौकिक दुःखों से पीड़ित लोगों के सन्ताप नाश के परोपकारी कार्य का शुभारम्भ किया ! सत्संग रूपी वटवृक्ष को काई भी तोड़ नहीं सकता ! सत्संग कल्पमतरु के समान है इसमें जो जैसा भाव रखता है उसे वैसा फल मिलता है !

'सत्संग निज कल्पतरु-सकल कामना देत'

इस कलिकाल में भवसागर को पार करने के लिए सत्संग और सेवा सबसे सरल एवं सुगम साधन है, जिससे सर्व दुःखों से छूटकर परमपद की प्राप्ति होती है !

कलियुग में प्रधान है सेवा पुनि सत्संग।
कहे टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुःख भंग।।

सद्गुरु महाराज भक्ति के साथ-साथ कर्म प्रधान थे ! शुभ कर्मों के प्रणेता थे ! भक्तों को शुभ कर्म करने के लिए प्रेरित करने वाले थे ! सभी संतजन बुरे कर्मों से

दूर रहने का उपदेश देते हैं ! पूर्व के शुभ कर्मों से मनुष्य देह मिली है, तो अभी शुभ कर्म करके मोक्ष प्राप्ति होगी ! मनुष्य को केवल कर्म करने चाहिए, फल की इच्छा नहीं रखनी चाहिए ! सद्गुरु महाराज जी कर्म में विश्वास रखते थे ! शुभ कर्म करने का संकल्प करते थे ! 'सत्कर्म' करने से पहले कर्म को समझना चाहिए-

पहले मतलब समझ कर्म का, फेर कर्म को करना रे।
कर्म जिसका मर्म न जानो, तां पीछे ना पड़ना रे।।
जिन कर्मों का फल सुखदायी, ताँको चित्त में धरना रे।
वेदविहित कर्मो को करके, कहे टेऊँ मन हरना रे।।

श्री गुरुदेव भगवान ने समाज में ऊँच-नीच का भेद खत्म करते हुए स्वयं कुत्ते को उठाकर कर्मशील होने का परिचय दिया ! श्री अमरापुर दरबार के निर्माण के समय श्री गुरु महाराज जी स्वयं भगवान की सेवा समझ मिट्टी, रेत, बजरी आदि उठाकर सेवा किया करते थे ! इसी प्रकार सेवा उदारता का परिचय देकर एक सूरश्याम बालक के ऊपर कृपा कर उसे पारँगत केवल गवैया के नाम से प्रसिद्ध कर उसका जीवन सँवार दिया !

धर्म-कर्म ना छोड़िये, जब तक तन में श्वास।
कह टेऊँ करते रहो, धारे मन विश्वास।।

जीवन पर्यन्त श्री गुरुदेव भगवान कर्मशील बने रहे ! वे कर्म करने में भी सेवा कर्म को अमृत-तुल्य मानते थे ! स्वयं साधु- संतों, गरीबों, अनाथों, अतिथियों की सेवा करते थे ! समय-समय पर हम जीवों को संदेश देकर कहते थे कि माता-पिता, गुरु, अतिथि, गो-सेवा, आदि सेवा कर्म दुःख दूर करके सुख-समृद्धि प्रदान करता है! रामायण में आता है-

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा।।

चैत्र मेले के अवसर पर आश्रम में जगह-जगह कचरा-गंदगी होने पर ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्वयं साफ-सफाई कर अमाननीय सेवा का परिचय दिया ! कभी भी किसी के आगे हाथ न फैलाकर स्वयं मेहनत - मजदूरी कर स्वयं बजाने हेतु वाद्ययंत्र 'यकतारा' खरीदा ! दोपहर के समय दर्शनार्थ आये अतिथियों को भोजन, जल एवं आवास देकर सुश्रूषा सेवा की ! ऐसी अनेक लीलाओं में कठोर कर्म व संकल्प शक्ति से 30-35 फुट ऊँचे रेत के टीले के ऊपर **'श्री अमरापुर धाम'** की स्थापना कर असम्भव कार्य को सम्भव कर दिखलाया ! जीवन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं- **कथनी से अधिक करनी स्वामीजी में विद्यमान थी** ! इन्हीं गुणों व कर्मशीलता के कारण पूज्य श्री गुरुदेव भगवान की यश-कीर्ति चहुँ और व्याप्त है !

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति और कर्म के अद्‌भुत उपासक थे ! वैदिक धर्म की रक्षार्थ **'आचार्य श्री गुरुदेव टेऊँराम जी महाराज'** ने अपने साधना के बल अथवा भक्ति के प्रचण्ड प्रताप से एक नये निराले पंथ का शुभारम्भ किया ! उनके प्रेम प्रकाश पंथ, श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ, सत्‌नाम साक्षी महामंत्र, और पावन तीर्थ श्री अमरापुर धाम का निर्माण, विश्व इतिहास में अमिट छाप छोड़ेगा !

भक्ति एवं प्रेमावतार सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

ढाई अक्षर प्रेम में सब कुछ निहित है ! सदियों से प्रेम की महिमा गाई गई है ! समय-समय पर सन्तों ने इस विषय की महत्ता स्थापित की है ! महाप्रभु चैतन्य, कबीर, रैदास, सूरदास, मीरा, गुरूनानक, तुलसीदास जी महाराज ने भक्ति रस का प्याला पिलाया है, उसी प्रकार सिन्ध प्रान्त में अवतरण लेकर हमारे इष्ट आराध्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने **'प्रेम-प्रकाश ग्रंथ'** की रचना करके जन-जन को भक्ति रस से ओत-प्रोत कर दिया है ! इस ग्रंथ में ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, पद, सलोकमाला, सोलह शिक्षाओं का अनूठा समावेश है ! इनमें छन्दावली में विविध विषयों पर गुरुदेव ने अपनी वाणी को शृँगारित किया है ! इनमें से एक विषय **'प्रेम'** की महिमा को उजागर करता है !

प्रेम ही के वश प्रभु नाई बने सैन हित,
प्रेम वश केवट से चरण धुलाया है।
प्रेम ही के वश प्रभु बेर खाये भीलनी के,
प्रेम वश हरि शाक विदुर का खाया है।
प्रेम ही के वश प्रभु पार्थ का रथ हांका,
प्रेम वश प्रभु यज्ञ-जूठन को उठाया है।
प्रेम ही के वश लीने तन्दुल सुदामा जी के,
कह टेऊँ प्रेम इक प्रभु मन भाया है।

मानव जीवन की सफलता 'प्रेम' (प्रभु-प्रेम) में परिलक्षित होती है ! मन से प्रभु के प्रति समर्पण भाव ही सच्चा प्रेम है ! जगत् के पदार्थों से प्रेम मिथ्या है ! प्रेम दूज के चांद की तरह होना चाहिए, जो उत्तरोत्तर बढ़ता ही रहे !

कहे टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा है अधिकाय।
प्रेम भरे प्रवाह में, ज्ञान ध्यान बह जाय।।

यह जगत् भगवान की विचित्र लीलाओं का एक रंगमँच है. हम सामान्यजन यहाँ अपनी- अपनी भूमिका निभाते हैं और अभिनय समाप्त होने पर अदृश्य हो जाते हैं ! किन्तु इसी बहुविध विविधताओं और द्वन्द्वों से आप्लावित निःसार संसार की सारता और परमोपयोगिता को सिद्ध करने के लिए समय-समय पर महाविभूतियों का अवतरण होता रहा है ! वे अपने जीवन से, कर्म से, व्यवहार से और ज्ञान से सांसारिक लोगों को, क्रिया प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करते हैं ! ऐसी ही एक महान, प्रातः स्मरणीय, वन्दनीय विभूति का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् 1944 को आषाढ़ शुक्ल की षष्ठी, दिन शनिवार को धर्ममयी माता कृष्णा देवी व पिता श्री चेलाराम के घर हुआ ! बचपन से ही आपको ईश्वर की भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त हुआ. इसके फलस्वरूप आपने मात्र चौदह वर्ष की आयु में **'गुरूदेव स्वामी आसुराम जी महाराज'** से गुरू दीक्षा प्राप्त की !

बालपन में उनका खेलने का ढंग भी निराला था ! साथियों को इकट्ठा करके आसन लगाते थे, फिर स्वयं आँखें बन्द करके अन्य को भी आंखे बन्द करने को कहकर राम नाम की धुन लगाते थे ! कभी नदी के किनारे, तो कभी बाग-बगीचों में, कभी पीपल के नीचे, तो कभी शांत स्थान पर मित्र मंडली के साथ प्रभु-भक्ति में लीन हो जाते थे ! इकतारा लेकर जब स्वामी जी भजन गाते थे, तो नागरिकगण अपना-अपना कार्य छोड़कर स्वामी जी के भजन-रस में डूब जाते थे !

सद्गुरु महाराज जी का व्यक्तित्व महान था ! उसी का प्रतिबिम्ब कृतित्व में भी परिलक्षित होता था ! साधारण शब्दावली में गम्भीर दार्शनिक विषयों पर विवेचन अपने आप में विशेष है ! जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन करते हुए सद्गुरु जी लिखते हैं -

रैन गयी पुनि दिवस भया, दिवस गया भयी रात।
कहे टेऊँ मन चेत ले, आयु ऐसे जात।।

सत्संग की महिमा के संबंध में स्वामी जी का कथन है कि सत्संग रूपी वटवृक्ष को कोई भी तोड़ने में समर्थ नहीं है ! सत्संग रूपी वृक्ष का आधार परब्रह्म-परमात्मा है, जो दिव्य है ! जिसका प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है. इसीलिए तन-मन-धन का अहंकार छोड़कर सत्पुरुषों की सेवा में रम जाओ ! गुरु ही प्रभु से मिलाता है. भक्ति में ओत-प्रोत होकर ईश्वर के दिव्य-दर्शन कर सकते हैं ! भक्ति के विशाल व्योम में **महायोगी सद्‌गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज** जैसे तेज पुँज मण्डित नक्षत्र का उदय हुआ और उन्होंने सत्संग की पावन मंदाकिनी से लौकिक दुःखों से पीड़ित जनों के सन्ताप नाश के परोपकारी कार्य का शुभारम्भ किया !

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिये एक संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** रखा गया ! संतों का हृदय कोमल होता है !

स्वामी जी ने **'सत्‌नाम साक्षी'** के परम पवित्र मंत्र से प्रेमियों को दीक्षित किया तथा इस मंत्र को आत्मसात करने का उपदेश दिया ! स्वामी जी जात-पात, ऊँच नीच, अपना-पराया में भेद नहीं करते थे ! तहसीलदार वाहिद बख्श, रमजान, वकील भगवान दास और ब्राह्मण हुन्दलदास स्वामी जी के सम्पर्क में आए, तो उनके हृदय में परिवर्तन आ गया ! बीसवीं शताब्दी में सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति युगीन सन्त समुदाय के प्रतिनिधि सन्त थे ! इनका समाज सुधार के प्रति व्यापक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने की सहज प्रणाली आज भी जन-जन को उपकृत कर रही है ! उनके द्वारा रचित सोलह शिक्षाएँ सदैव मार्गदर्शक के रूप में सहायक सिद्ध होंगी ! वर्तमान में उनका पावन तीर्थ स्थल **'श्री अमरापुर स्थान'** जयपुर में स्थित है ! इस स्थल पर भव्य श्री मन्दिर एवं समाधि स्थल भी बना हुआ है !

सम्वत् **1999** के पुरुषोत्तम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को **55** वर्ष की अल्पायु में सद्गुरु महाराज जी ने प्रेम प्रकाश आश्रम हैदराबाद (सिन्ध) में आसन मुद्रा मे अपने पंचभौतिक देह का विसर्जन किया ! उनकी आत्म-ज्योति परब्रह्म की महाज्योति में समा गई ! उनका दिव्य आलोक आज भी पूरे विश्व में अनन्त जीवों का मार्गदर्शन कर रहा है !

अमरलोक से आगमन, अमर लोक प्रस्थान।
अमरापुर वाणी, अमर-अमरापुर स्थान।।

सम्पूर्ण विश्व में लाखों प्रेम-प्रकाशीगण उनके शहरों, कस्बों में स्थित **'प्रेम प्रकाश आश्रमों'** में नित्य सत्संग के माध्यम से सद्गुरु महाराज जी के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल कर रहे हैं !

ऐसे दिव्य महाविभूति के पावन श्री चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !

!! ॐ श्री सत्नाम साक्षी !!

श्री प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक संस्थापक-महायोगी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

सद्गुरु वे हैं, जो शिष्य को शिष्यत्व व जीवत्व से हटाकर ब्रह्मतत्व में ब्रह्मरस की परम तृप्ति और परमानन्द की प्राप्ति कराने को सदैव प्रयासरत रहें !

ऐसे ही सच्चे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् 1944 को आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि (सिन्धी तारीख-चौथ) की शनिवार के दिन धर्ममयी माता कृष्णा देवी व पिता श्री चेलाराम के आंगन में प्रातः 5 बजे हुआ !

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति संबंधी वातावरण प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप आपने मात्र चौदह वर्ष की आयु में **दादा सद्गुरु आसूराम जी महाराज** से गुरुदीक्षा प्राप्त की ! आपने गुरुजी के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास, दुख-सुख-सर्दी- गर्मी आदि कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त की !

16 वर्ष की आयु में पिताजी के देहावसान के पश्चात् आपने पिताजी की दुकान पर बैठना प्रारम्भ किया, यहां भी संत-महात्मागण आकर उनसे धर्म व भगवत प्राप्ति विषयों पर वार्तालाप करते ! इकतारा लेकर जब स्वामी जी भजन गाते थे, तो नागरिकगण अपना-अपना कार्य छोड़कर स्वामी जी के भजन-रस में डूब जाते थे ! सिन्धु नदी के तट पर आप ध्यान-योग में इतने तल्लीन हो जाते थे कि मानव तो क्या पर पशु-पक्षी भी पास आकर बैठ जाया करते थे !

मनुष्य जीवन के संबंध में स्वामी जी का कथन है कि मनुष्य-जीवन दो किनारों के बीच झूल रहे उस पुल जैसा है, जिसमें पशुता भी छिपी है, तो परमात्मा से मिलने की प्यास भी छिपी है ! अतः अपने मूल स्वरूप को पहचानो, अपनी वृति को अर्न्तमुख करके इसे पहचानों अपने उपदेशों में स्वामी जी कहते थे कि हम परमात्मा से अस्थायी वस्तुएं जैसे धन-धान, सुख-संतान नहीं मांगे, मांगना ही है तो संत-दर्शन संतों का सानिध्य मांगे, जिससे हमारा मोक्ष और कल्याण हो सके !

स्वामी जी क्रोध के संबंध में कहते थे कि क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं हैं, क्रोध तो मनुष्य शक्ति का विकृत रूप है ! एक बार क्रोध करने से मनुष्य के अन्दर की सुविकसित डेढ़ लाख कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं और जितने शुभ-कर्म जीवन में मनुष्य करता है वह नष्ट हो जाते हैं !

सत्य-मार्ग पर लोगों को राह दिखवाने हेतु स्वामी जी ने सन्त-मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम "**प्रेम प्रकाश मण्डल**" रखा ! अपनी सन्त-मण्डली के साथ देशाटन करते स्वामी जी "सिन्ध-प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डा-आदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रुके ! इस घने जंगल में जगह-जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर सेवा करके 20-25 झोपड़ियां व सत्संग-स्थल का निर्माण कर "**श्री अमरापुर स्थान**" की स्थापना की। स्वामी जी ने अपने मूल-मंत्र "**सत्नाम साक्षी**" प्रेमियों को प्रणाम-मंत्र के रूप में आत्म-सात करने की दीक्षा दी !

सत्संग की महिमा के संबंध में स्वामी जी का कथन है कि सत्संग रूपी वट-वृक्ष को संसार में कोई भी तोड़ने में समर्थ नहीं है ! सत्संग रूपी वृक्ष का आधार पारब्रह्म परमात्मा है, जो दिव्य है, सर्वत्र जिसका प्रकाश फैल रहा है ! सत्पुरुष महात्मा इसकी बड़ी शाखाएं हैं, इसलिए तन-मन का अहंकार छोड़कर उन सत्पुरुषों की सेवा करते रहो !

स्वामी जी ने अपने उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएं रची हैं, जिनमें प्रमुखतया "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली छन्दावली आदि हैं, स्वामी जी रचित भक्ति-भजन अमरापुर वाणी में संकलित हैं, जो आज भी पूरे विश्व में अनंत जीवों का मार्ग-दर्शन कर रहा है !

सम्वत् 1999 के पुरुषोत्तम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को 55 वर्ष की अल्प आयु में सद्‌गुरू महाराज जी ने प्रेम प्रकाश आश्रम हैदराबाद (सिन्ध) में आसन-मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा ! उनकी आत्मा-ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गयी ! पर उनका आलोक आज भी प्रेम-प्रकाशियों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है !

पूरे विश्व में लाखों प्रेम-प्रकाशीगण अनेक शहरों-कस्बों में स्थित प्रेम-प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रति सत्संगों के माध्यम से सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं ! देश-विभाजन के पश्चात् सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में श्री अमरापुर स्थान की स्थापना की, जो आज प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है, इसी पावन स्थल पर सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का भव्य **श्री मन्दिर** एवं **समाधि-स्थल** है, जहां आज हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन आकर नमन - वन्दन करके मानव जीवन को सार्थक बनाते है !

ऐसे अलौकिक दिव्य महाविभुति को हमारा शत् शत् नमन् ! कोटि - कोटि वन्दन !

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

यह संसार नश्वर है ! पुरोदृश्यमान वस्तुओं में चेतन-अचेतन सब नाशवान है ! यह जगत भगवान् की विचित्र लीलाओं का एक रंगमंच है, हम सामान्य जन यहाँ अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं और अभिनय समाप्त होने पर अदृश्य हो जाते हैं ! किन्तु इसी बहुविध विविधताओं और द्वन्द्वों से यआप्लावित निःसार संसार की सारता और परमोपयोगिता को सिद्ध करने के लिये समय-समय पर महाविभूतियों का अवतरण और आविर्भाव होता है ! वे अपने जीवन से, कर्म से, व्यवहार से और ज्ञान से सांसारिक लोगों की क्रिया एवं प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करते हैं ! ऐसी ही एक महनीय, माननीय शिष्ट-विशिष्ट- वरिष्ठ विभूति का आषाढ़ शुक्ल षष्ठी शनिवार सम्वत् १९४४ (९ जुलाई १८८७) को अवतार हुआ ! विलक्षण लक्षणों से सम्पन्न शैशव काल से ही अलौकिक विद्याविज्ञ एवं असाधारण क्रियावान् इस महापुरुष का लोकोद्धार बाल्यावस्था में ही प्रारम्भ हो गया था ! लोकोत्तर गुण गरिमा से गरिष्ठ महात्माओं का आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता है !

भारतवर्ष का यह परम सौभाग्य है कि यहाँ परम पिता परमात्मा की अनुकम्पा से परम सिद्ध संतों और ईश्वर के अंशभूत अवतारों का प्रादुर्भाव होता है ! महायोगी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज इसी संत परम्परा की परम कल्याणकारिणी पंक्ति की प्रतिष्ठित प्रतिभा हैं ! भारत के इतिहास का भक्तिकालीन युग स्वर्णाक्षरों से लिखने योग्य है ! इस युग के कबीर, रहीम, रैदास, सूरदास, रसखान, मीरा, चैतन्य महाप्रभु, गुरुनानक आदि अनेक दैदीप्यमान नक्षत्र थे, जो अपनी भक्ति से उस ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति सरस और सरल काव्यों, दोहों और पद्यों के माध्यम से कर सके थे. बीसवीं शताब्दी में भक्ति के विशाल व्योम में संत श्री स्वामी टेऊँरामजी महाराज जैसे तेज पुंज मण्डित नक्षत्र का उदय हुआ और उन्होंने सत्संग की पावन मन्दाकिनी से लौकिक दुःखों से पीड़ित जनों के संताप नाश का परमोपकारी

कार्य शुभारम्भ किया ! सांसारिक लोग अज्ञान से ग्रस्त होने के कारण अपने जीवन के परम लक्ष्य को भूल जाते हैं और नाशवान् वस्तुओं की प्राप्ति और सुरक्षा में ही अपनी अमूल्य शक्ति को समाप्त कर जन्म-मरण के चक्र में बंधे रहते हैं ! महात्मा और संत सत्य के प्रतीक हैं, वे अन्तिम सत्य की प्रतिमूर्ति हैं ! संसारी लोगों की इस अवस्था और दयनीय दशा को देखकर उनकी कारुणिक भावना, हम लोगों की पीड़ा को दूर करने के उपाय बतलाती है !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिये एक संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** रखा ! यह सन्त मण्डल सत्य का उपदेश देता हुआ मनुष्य को उसके जीवन के वास्तविक उद्देश्य से परिचित कराता था ! हम साधारण जन विस्मृति के अधीन हैं ! विस्मरण हमारा स्वभाव है ! यही सोचकर साधु, संत और महापुरुष हमें समय-समय पर दिव्य उपदेशों से भवरोग मुक्त करते हैं ! सन्तों की प्रवृत्ति कोमल होती है ! अतः हमारे द्वारा बार-बार अक्षम्य त्रुटियाँ हो जाने पर भी, वे पुनः सत्य के मार्ग का उपदेश करते हैं ! सर्वत्र सत्य का प्रचार करते हुए स्वामीजी ने सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक पावन तपोमय वन में, 'श्री अमरापुर स्थान' की स्थापना की ! इस आश्रम में २०-२५ पर्ण कुटियाओं व सत्संग स्थल का निर्माण किया ! स्वामीजी ने 'सत्नाम साक्षी' के परम पवित्र महामंत्र से प्रेमियों को दीक्षित किया तथा इस मंत्र को आत्मसात् करने का आदेश दिया !

'बिनु सत्संग विवेक न होई' इस सिद्धांत और अटल नियम का स्मरण कर संतश्री ने सत्संग की महिमा को उजागर किया ! सत्संग सांसारिक विषय वासना को दूर कर परम सत्य की ओर उन्मुख करता है ! विवेक को जाग्रत करता है. सत्संग के प्रभाव से अज्ञान का नाश होता है और अज्ञान के नाश होने पर मोक्ष का मार्ग दिखाई देने लगता है ! वेदान्त के सिद्धान्तानुसार यह संसार असत् है, यथा-'रज्जु परित्यज्य सर्प गृछाति वैभ्रमात्। तद्वत् सत्यम विज्ञाय जगत् पश्यति मून्धी।।' जैसे रस्सी में सर्प का भान और शूक्ति में रजत (चांदी) है ! इस परम सत्य का ज्ञान ही सत्संग का उद्देश्य है. सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने इसी सत्य का उपदेश इस प्रकार किया है -

सुन्दर देह को देख न फूलो, इक दिन ये जर जायेगी।

माया का अभिमान तजो, यह अन्त काम नहीं आयेगी।।

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का मौलिक चिन्तन और दर्शन उनके सत्संग प्रवचनों और रचनाओं में प्रकाशित हुआ है ! **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ'** एक विशालकाय आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ है जिसका विषय विभाग व्यापक है ! इसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली और छन्दावली आदि है ! श्रीरामचरितमानस के रचयिता भक्त शिरोमणि श्री तुलसीदासजी के समान ही सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की कवितावली और छन्दावली भक्तिरस से ओत-प्रोत और उपदेश की अपूर्व कृतियाँ कही जा सकती हैं ! सद्गुरु महाराज जी के स्वरचित भजन **'अमरापुर वाणी'** में संकलित हैं जो सरस पदावली के कारण जन सामान्य को उपदिष्ट कर रहे हैं ! भगवान् प्रेम के वशीभूत होकर प्राणी का उद्धार करते हैं- इसी प्रेम ने भगवान को कर्माबाई के घर बुलाया तो कभी शबरी के झूठे बेर खिलाये !

कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी अरू हनुमान।

टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।

कबीरदासजी ने भी तो प्रेम को ही सब शास्त्रों का सीमान्त रेखा माना है-

पोथी पढ़ पढ़ जुग मुआ, पण्डित भया न कोई।

ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पण्डित होई।।

सद्गुरु महाराज जी का व्यक्तित्त्व जितना महनीय है, उसी का प्रतिबिम्ब कृतित्त्व में भी परिलक्षित होता है ! साधारण शब्दावली में गम्भीर दार्शनिक विषयों का सरलता पूर्वक विचार और विश्लेषण अपने आप में विशेष है ! जीवन की क्षण भंगुरता का वर्णन करते हुए गुरू महाराज जी लिखते हैं-

रैन गयी पुनि दिवस भया, दिवस गया भयी रात।

कह टेऊँ मन चेत ले, आयु ऐसे जात।।

प्रत्येक क्षण मनुष्यों की आयु क्षीण होती जा रही है, मृत्यु निकट आ रही है ! अतः सदैव ईश्वर का ध्यान सुमरण करना चाहिये ! उसी से हमें मुक्ति मिलेगी !

युगपुरुष महायोगी सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज भक्तियुगीन संत समुदाय के प्रतिनिधि सन्त थे ! इनका समाज के सुधार के प्रति व्यापक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा प्रदान करने की सहज प्रणाली जन जन को उपकृत कर रही है ! उनका उपदेश है कि यदि सुख की अभिलाषा है तो हरि का जाप करो !

सद्गुरु महाराज जी बीसवीं शताब्दी के दिव्य अवतारी महापुरुष थे और सिद्ध संत परम्परा के प्रतिनिधि थे ! परमात्मा के प्रत्यक्षीकरण की विद्या को पुनः जन साधारण के लिये सुलभ करने का उनका प्रयास सदैव स्मरणीय रहेगा ! असत्य का अस्तित्त्व नहीं रहता और सत् का अभाव नहीं होता इसी सिद्धांत के अनुसार सद्गुरु महाराज के सत्य सिद्धांत सदैव संसार को मार्गदर्शन कराते रहेंगे और उनके द्वारा रचित **'सोलह शिक्षाएँ'** मार्गदर्शक के रूप में सदैव सहायक सिद्ध होंगी वर्तमान में उनका पावन तीर्थ स्थल **श्री अमरापुर स्थान, जयपुर** में स्थित है ! इस स्थल पर भव्य मंदिर व समाधि स्थल भी बना हुआ है ! आज हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन इस पवित्र तीर्थधाम के दर्शन करते हैं ! प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के इस महान विभूति **'आचार्यश्री'** को कोटिशः नमन और वन्दन है !

युगविभूति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

ब्रह्मरूप ब्रह्ममयी, सगुण रूप साकार।
टेऊँराम बन धरती घट, लिया प्रभू रूप अवतार।।

एक समय देवलोक में भगवान विष्णु, महेश व अन्य देवतागण, मृत्युलोक की चर्चा कर आपस में मंत्रणा कर रहे थे ! तभी हरि गुणगान करते हुए देवर्षि नारद वहाँ आये ! समस्त देवों को प्रणाम कर प्रार्थना करने लगे, कि हे देव ! मैं अभी मृत्युलोक की यात्रा से आ रहा हूँ ! वहाँ के जीव अज्ञान की राह में भटक कर पाप कर्मों को करके अनेक दुःखों का सामना कर रहे हैं ! अतः उन जीवों के कल्याणार्थ उनके हृदय के अज्ञानाधंकार को मिटाकर उनके जीवन में ज्ञान की ज्योति जगाने हेतु कोई उपाय बतायें ! तब विष्णु भगवान ने शंकर भगवान से कहा कि आप मृत्युलोक जाकर मनुष्यों के जीवन में ज्ञान का प्रकाश कर सोते हुए जीवों को जगाने का उत्तम कार्य करें ! इसी निश्चय को धर भगवान शंकर ने समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु मृत्युलोक में रहने का निश्चय किया ! इस निश्चय के क्रियान्वयन में उन्होंने एक परिवार में साधारण बालक के रूप में जन्म लेकर कर्म, धर्म, धीरज तथा दृढ़ संकल्प की लीला करते हुए एक साधारण जीव के रूप में अवतार धारण करने का निश्चय किया ! तब भगवान शंकर ने एक भगवत् प्रेमी परिवार का चुनाव किया, जो कि सिंध देश में सिंधु नदी के किनारे बसे ‘खण्डू’ नामक ग्राम में रहता था, उनका नाम था- श्री चेलाराम व उनकी धर्मपरायण स्त्री का नाम था- कृष्णादेवी !

भगवान शंकर ने अंश रूप धारण करके सम्वत् 1944 शनिवार के दिन प्रातः वेला में माँ कृष्णा के गर्भ से एक दिव्य बालक के रूप में अवतार लिया ! उस बालक के जन्म समस्त देवलोक गद्गद हो आकाश से आशीर्वाद रूपी बादल बरसाने लगे ! वह बालक असीम शक्तियों ऋद्धि-सिद्धियों से पूर्ण होते हुए भी जन कल्याण के कार्य हेतु साधारण रूप में दिखाई पड़ता था ! क्योंकि उस दिव्य बालक को बड़ा होकर ज्ञान कर्म व सत्य का मार्गदर्शन कराना

था ! साधारण सी खुशी व प्रेमभाव से उनका नामकरण संस्कार किया गया ! जिसमें स्वयं विष्णु भगवान ने ब्राह्मण रूप धर उस बालक का नाम **'टेऊँराम'** रखा !

प्रकृति के नियमानुसार उनको तो साधारण जीवन में रहकर जीवों के उद्धार हेतु अनेक लीलाएँ जो करनी थीं, इसी कारणवश वे सामान्य जीवन जीते हुए बड़े होने का इंतजार करने लगे ! समय की सुई अपनी निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार आगे बढ़ती रही, बालक थोड़ा बड़ा हुआ लेकिन हम उम्र बालकों के साथ उस बालक का मन नहीं लगता था ! वह हमेशा एकांत में रहना पसंद करता था ! वह कई-कई घंटे एकांत में बैठा चिन्तन में लीन रहता था !

एक समय सब बालक मिलकर सिन्धु नदी के तट पर खेलने के लिए गये ! वहाँ सभी बालक खेल रहे थे, किन्तु वह दिव्य बालक सिर्फ सिन्धु नदी को निहार रहा था ! सिन्धु नदी भी उस दिव्य बालक के दर्शन कर अभिभूत हो उनके चरण स्पर्श को लालायित हो उठी ! तब सिन्धु नदी की इच्छापूर्ति हेतु वरुणदेव ने एक लीला रची ! वहाँ सारे बालक खेलकर अब नहाने की इच्छा करने लगे ! तब सब बालकों ने कपड़े उतारकर उस दिव्य बालक को दिये व सिन्धु नदी में नहाने लगे ! उन बालकों में एक **'खिल्लू'** नामक बालक भी था, जो वरुणदेव की लीलानुसार बहने लगा ! सब बालक चिल्लाने लगे ! तब वह दिव्य बालक बिना एक क्षण गँवाये, उस सिन्धु नदी की प्रबल धारा में छलांग लगाकर खिल्लू नामक बालक को बचाने लगे ! उसी क्षण भगवान विष्णु भी इस लीला को देखने की लालसा मन में रख वहाँ प्रकट हुए ! उस दिव्य बालक से वार्तालाप कर '**भगवानश्री**' वहाँ से चले गये ! इधर वरुणदेव भी उस दिव्य बालक को प्रणाम कर फूले नहीं समा रहे थे ! सिन्धु नदी के भाग्य के तो क्या कहने, इस दिव्य बालक के चरण स्पर्श कर अपने को धन्य समझ रही थी ! इस प्रकार बचपन में ही उस दिव्य बालक ने साधारण जीवों के उद्धार हेतु कई कार्य किये ! उस दिव्य बालक के पिता ने बालक को पढ़ाई करने हेतु पाठशाला भिजवाने का निश्चय किया ! बालक अपने पिता की आज्ञानुसार पाठशाला जाने लगा ! पाठशाला में इस दिव्य बालक को शिक्षक रूपी गुरु आसूराम जी महाराज के दर्शन होते हैं ! बालक को पढ़ना तो क्या, सिर्फ लीला हेतु वे पाठशाला में जाने लगे ! उनको गुरु आसूराम जी महाराज ने उस सत्य स्वरूप '**ॐ**' नाम की दीक्षा दी ! बस वे इसी एक अक्षर में ही सारे ब्रह्माण्ड का स्वरूप देख उसी एक अक्षर को पढ़ ध्यानमग्न हो गये ! सांसारिक पढ़ाई में उनका मन नहीं लगता था ! वे दिन भर एकांत में रहकर '**ॐ**' अक्षर का अभ्यास करने लगे ! समय आगे बढ़ता है ! बालक को तो ज्ञान का

प्रकाश फैलाने के लिए अनेक लीलाएँ जो करनी थीं व प्रेम का प्रकाश फैलाना था ! वे सांसारिक बातों से मन को हटाकर परमात्म चिन्तन में लगे रहते थे ! चिन्तन करते करते उनका मन संसार से विरक्त हो उठा ! बालक को यह दुनिया सब मिथ्या लगने लगी ! **12** वर्ष की छोटी अवस्था में ही उनके मन में योग की भावना उत्पन्न हुई और वे कभी जंगलों में जाकर, तो कभी कब्रिस्तान में, तो कभी श्मशानों में, तो कभी घने वृक्ष के नीचे, तो कभी विशाल गुफाओं में जाकर उस **'ॐ'** शब्द का अभ्यास करने लगे ! उन्हें हिंसक पशुओं से भी डर नहीं लगता था ! वे भी इनके आगे नतमस्तक हो इनकी वंदना करते थे ! एक दिन सब देवों ने संतों का रूप धारण कर इस दिव्य बालक के दर्शन करने की सोची और वे सब संतों की टोली में उनके घर पधारे, संतों को देख उस दिव्य बालक की खुशी का ठिकाना नहीं रहा ! वे श्रद्धा, प्रेम, उल्लास के साथ उन संतों की सेवा में लगे रहे ! अहोभाव से सारी सेवा अपने हाथों से ही करने में अपने को धन्य समझने लगे !

सेवा का प्रसाद ही है जो आज इस बालक की कीर्ति सारे ब्रह्माण्ड में फैल रही है ! संतों की सेवा व संतों के संग ने उनके मन में वैराग्य उत्पन्न कर दिया ! वे माता-पिता से प्रार्थना करने लगे कि मुझे इस जीवन को संवारने का मौका मिला है, मैं इस मिथ्या संसार को छोड़कर अपने जीवन को सत्कर्म व सेवा में सौंप देना चाहता हूँ ! यही दृढ़ निश्चय कर वे हमेशा जंगलों में रहने लगे !

मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज ।
भूल न किसी से मांगिएं, कैसा भी हो काज ।।

एक बार सत्संग-भजन हेतु उनके मन में यकतारा (वाद्ययंत्र) लेने की इच्छा हुई ! इसके लिये उन्होंने स्वयं मेहनत मजदूरी (बेलदारी) करके यकतारा साज खरीदा ! स्वावलम्बन की ऐसी उच्च भावना जो आगे चलकर स्वकर्म की सच्ची शिक्षा बनी !

एक दिन उसी नगरी यानि खण्डू में एक गरीब औरत के घर के बाहर एक कुत्ता मर गया ! उस कुत्ते को हरिजन लोग उठाने के लिए अधिक पैसे माँग रहे थे ! उस गरीब औरत के पास इतने पैसे थे नहीं ! तब बालक टेऊँराम स्वयं अपने हाथों से उस मृत कुत्ते को उठाकर दूर फैंक आये ! पूरे नगर में जब यह बात चर्चित हुई, तो वहाँ की पंचायत ने उन्हें बुलाया और कहा कि यह काम हरिजन का है ! तब बालक टेऊँराम के वचन थे- पर उपकार व सेवा में कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता है ! मैंने परोपकार हेतु **'भगवान के नाम'** को महत्व

देकर यह छोटा सेवा कार्य किया है, आप चाहें मुझे जो दण्ड देंगे, मुझे स्वीकार है !

ऐसी अनन्त लीलाएँ कर दिव्य बालक टेऊँराम ने अपने द्वारा स्वकर्म, दृढ़ इच्छा शक्ति व सेवा समभाव का परिचय दिया !

समयानुसार बालक टेऊँराम अपनी साधना में रत हो सेवा कार्य करते हुए युवावस्था में प्रवेश करता है ! युवावस्था में भी वे अपना समय शुभ कार्यों में, दुनिया की सेवा एवं समस्त इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर उस सच्चिदानन्द भगवान की आराधना में ही व्यतीत करते रहे ! एक समय वरुणदेव ने युग पुरुष की परीक्षार्थ सिन्धु नदी में तेज बहाव लाकर, सिन्ध देश को जलमग्न कर, सिन्धुवासियों को बहाने की सोची ! तब सब मिलकर उस युगपुरुष के पास पहुँचे ! युगपुरुष टेऊँराम चाहते तो अपनी योगशक्ति से उस जल के प्रताप को रोक सकते थे, किन्तु पंचायत व सारी संगत के साथ सिन्धु नदी जाकर भगवान वरुणदेव को प्रार्थना-स्तुति कर प्रसन्न किया व सिन्धुवासियों पर आई इस विपदा को हर लिया !

दूहल तुंहिंजे दर ते, सिक सां करियूं सुवाल।
सुवाल सुणी सुवालियुनि जा, सदा थीउ रखपाल।
करि नज़र सां निहालु, हिन सारीअ संगति खे।

इस मौके पर स्वामी जी की आज्ञानुसार पंचायत द्वारा मीठे चावलों की देगें बनाकर उसका प्रसाद घर-घर में वितरित किया गया ! इस प्रकार अपने को निमित्त मानकर उन्होंने हमेशा मानव जाति की सेवा व उद्धार हेतु कई लीलाएँ रचीं !

एक समय युगपुरुष अपने नित्यकर्मों को करते हुए जंगल में बैठे अमृत रूपी नाम का स्मरण कर रहे थे, तब भगवान विष्णु की माया को संशय हुआ कि यह युगपुरुष वास्तव में ही तप में लीन है और इसने अपनी इंद्रियों को वश में किया हुआ है कि नहीं ! यह धारणा कर माया एक सुंदर स्त्री का रूप धारण कर युग पुरुष की परीक्षार्थ उनके तप में विघ्न डालने को उपस्थित हुई ! लेकिन उस युगपुरुष की तेज शक्ति व तेजस्वी मुखमण्डल का सामना न कर पाने के कारण, उनके चरणों में नतमस्तक हो वंदना करने लगी ! जब उनके श्रीचरणों को देखा तो वहाँ उस माया को असीम शक्ति का भंडार व ऋद्धि-सिद्धियाँ, शँख-चक्र-गदा-पद्म, यहाँ तक कि काल भी उनके चरणों में विचरण करते हुए दिखाई दिये ! ऐसा अलौकिक दृश्य देखकर माया उस युगपुरुष के श्रीचरणों में वंदना करके, वार्तालाप द्वारा अपना मंतव्य बताकर क्षमा माँगकर चली गई !

इस प्रकार युगपुरुष समस्त कामनाओं को जीतकर अपनी इंद्रियों को अपने वश में करके, क्रोधरूपी ज्वाला को भी निर्मल जल की भाँति ठण्डा कर संसार में विचरण कर रहे थे ! प्रारब्ध अनुसार एक समय युगपुरुष टेऊँराम ने सुना कि-

ज्यो सब घर में इक माटी, तथ्यों से जल सारो रे ।

कहे टेऊँ त्यो सब में शिव, साक्षी सिरजहारो रे ।।

जिस प्रकार घर भिन्न-भिन्न आधार के है परन्तु एक ही माटी से बने है, तरंगे जल से ही उत्पन्न होती है, फिर जल में ही समा जाती है, ये जल रूप है। उसी प्रकार सब में ब्रह्म विद्यमान है !

बस, यही बात उनके दृढ़संकल्पी मन को भा गई ! वे सारे जगत को मिथ्या रूप तो पहले ही मानते थे ! बस, बालू की भीत को स्थित बनाने की सोच वे जंगल में बालू के टीले की तलाश में निकल पड़े ! दृढ़ शक्ति से उन्होंने वह बालू का टीला भी ढूंढ़ निकाला ! अपना यकतारा ले उस बालू के टीले पर आसन लगाकर वहीं रहने का निश्चय किया ! दृढ़ निश्चय अनुसार उन्होंने वहीं बालू के टीले पर ही स्वयं अपने हाथों से पर्ण कुटिया का निर्माण कर लिया ! वहीं बैठ अपनी साधना में लीन हो अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जगाने लगे ! कभी-कभी वे यकतारा लेकर ऊँचे स्वर में भजन गाकर भी अपने मन को समझाने का प्रयास करते !

उनकी निर्विकार भक्ति, असीम साधना शक्ति, परोपकारी भावना व यकतारे की गूंज इतनी तेज थी कि उनकी गूंज से एक समय देवलोक में इन्द्र का सिंहासन तक हिलने लगा ! अपना सिंहासन हिलता देख इन्द्र घबराकर अपने गुरु बृहस्पति के पास गये और चिंतित मन से गुरु को उस युगपुरुष की बात उनको कह सुनाई ! बृहस्पति देव ने इन्द्र की व्यथा को भाँप उनसे कहा-इन्द्र ! यह युगपुरुष कोई साधारण व्यक्ति नहीं अपितु अवतारी पुरुष हैं ! इसे न तो तुम्हारे इन्द्रासन की चाहना है, न ही धन वैभव व कीर्ति की ! यह तो अलौकिक शक्ति द्वारा उस अमर तत्त्व की प्राप्ति हेतु तपस्या कर रहे हैं ! इस युगपुरुष के चरणों में तो असीम शक्ति का भण्डार है ! ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ इनकी अनुचर समान हैं ! यह युगपुरुष तो कल्याणार्थ ही भटके हुए प्राणियों के पथ प्रदर्शन हेतु ही अपने शरीर को कष्ट दे साधना में लीन है ! इनकी भक्ति निर्विकार है !

इस प्रकार युगपुरुष की तपस्या व भक्ति का प्रकाश चारों ओर फैलकर इस संसार को दैदीप्यमान करने लगा ! वहाँ लोगों का अपार जन समुदाय आने लगा ! उनके अनेक शिष्य अनुयायी बन जीवन सफल करने लगे ! उनकी बताई गई शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करने लगे ! युगपुरुष ने भी जन कल्याण की भावना से प्रेरित हो, उस बालू के टीले पर एक सुन्दर आश्रम के निर्माण का संकल्प किया ! ताकि आने वाले श्रद्धालुओं को बैठने व सत्संग श्रवण में कोई कठिनाई न आये ! इस संकल्प को पूरा करने हेतु स्वयं अपने हाथों से दिन-रात अखण्ड मेहनत करके आश्रम का निर्माण किया ! कहते हैं परोपकारी कार्य में विघ्न जरूर आता है ! इसी कारणवश उनकी कीर्ति व उनकी सेवा भावना देखकर कुछ पाखण्डी लोग व शरारती लोगों ने वहाँ उपद्रव फैलाया ! उस युगपुरुष को अपशब्द कहे ! अनेक प्रकार के कष्ट पहुँचाने लगे ! जब उनकी इन बातों से युगपुरुष विचलित न हुए तो बौखलाकर उन लोगों ने आश्रम में आग लगा दी ! कुएँ में भी गंदगी डाल कुएँ को मैला करने का प्रयास किया ! इन सारी विकट परिस्थितियों को देखकर भी उस युग पुरुष की धैर्य सीमा न टूटी ! उनके मुख से उन पाखण्डी पुरुषों हेतु कुछ नहीं कहा गया ! वे इसे भी परीक्षा की घड़ी समझ हरि इच्छा कहते हुए अपने दृढ़ निश्चय पर आधारित योजना को मूर्तरूप देने में लगे रहे ! पाखण्डी लोगों को यह बात रास नहीं आई और उन्होंने नई योजना बनाकर सरकार से शिकायत की कि इस संत पुरुष को यहाँ से बेदखल किया जावे ! यह देख स्वयं विष्णु भगवान माँ लक्ष्मी सहित (लक्ष्मी-नारायण) एक विदेशी अंगेज का रूप धर युगपुरुष के पास आये और कहने लगे कि कहो तो हम तुम्हारी सहायता करें ! बस, आप एक प्रार्थना-पत्र लिखकर दीजिए ! हम सरकार से आपको जमीन दिलवा देंगे ! तब उन युगपुरुष ने कहा- जिसने आश्रम जलाया है बनायेगा भी वही, (वे पहचान गये थे कि भगवान अंग्रेज अधिकारियों का भेष धारण करके आये हैं) यह बात सुन स्वयं भगवान व माँ लक्ष्मी उनकी परमार्थ व परोपकारी भावना से प्रभावित हो उनकी वंदना करते हुए वहाँ से चले गये !

धीरे-धीरे वहाँ एक सुन्दर आश्रम का निर्माण हुआ ! उस युग पुरुष ने एक सर्वशक्ति सम्पन्न मंत्र दिया- **"सत्नाम साक्षी"** ! नित्य नियम से सत्संग वर्खा होने लगी ! जहाँ बैठ असंख्य लोग सत्संग लाभ ले अपना जीवन सफल करने लगे ! उस आश्रम की सेवा वे स्वयं देखते थे ! सारे आश्रम में यकतारा ले विचरण किया करते थे ! आने वाले श्रद्धालुओं का विशेष ध्यान रखते व स्वयं उनको ढोढा-चटणी खिलाकर जल पिलाकर तृप्त किया करते थे !

एक बार आश्रम की देखभाल करते हुए वे एक कोने में लगे हुए कण्डी के वृक्ष के पास गुजर रहे थे तो देखा कि यहाँ से सेवाधारियों को आने-जाने पर कांटे चुभते हैं ! बहुत परेशानियाँ होती है ! पास में खड़े शिष्यों ने कहा- स्वामी जी ! आप आज्ञा दें तो इस कंडी के वृक्ष के पेड़ को काट दें ! स्वामी जी कहने लगे कि इस आश्रम में सबसे प्रिय वस्तु कोई है तो वह कण्डी का वृक्ष ही है ! यह ध्यान करने में बहुत सहायता करता है ! तब स्वामी जी ने अपने चिप्पी से जल की छींटा मारकर उस कंडी के वृक्ष के कांटे हमेशा के लिए निकाल दिये !

जिज्ञासुओं को अमरत्व प्राप्ति हेतु इस पावन स्थल का नाम **'श्री अमरापुर स्थान'** रखा ! स्वामी जी का अवतार शनिवार के दिन हुआ था ! तभी शनिवार का भी वरदान प्राप्त हुआ ! जो भी जिज्ञासु शनिवार के दिन श्री अमरापुर स्थान का दर्शन करेगा ! वह अमरत्व प्राप्त करके शनि के प्रकोप से बचा रहेगा ! इस प्रकार उस युगपुरुष ने परमार्थ के कार्य करते हुए कालान्तर में अपने ज्ञान व अपनी अनुभव शक्ति और योग शक्ति को जन कल्याणार्थ एक ग्रंथ में संग्रहित किया, उसका नाम रखा- **"श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ"** ! सत्य सनातन धर्म के अन्तर्गत एक सम्प्रदाय की नींव डाली ! जिसका उन्होंने नाम रखा- **"श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय"** ! उन्होंने एक ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया जो **"चैत्र मेला"** के नाम से विख्यात हुआ ! उनके द्वारा स्थापित अखण्ड ज्ञानयज्ञ व भोजन के अखुट भण्डारे का भी श्रद्धालु लोग रसास्वादन कर आज भी अपने को धन्य समझते हैं !

इस प्रकार समय की धुरी आगे चलती है ! प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय जो अब फूल की मानिन्द सुगंधित हो रहा था, जिसमें उस युग पुरुष स्वामी टेऊँराम जी महाराज के असंख्य शिष्य बन गये थे ! जो अब विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुके थे ! उन युगपुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने सभी शिष्यों को मिलाकर एक **"प्रेम प्रकाश मण्डल"** रूपी वटवृक्ष की नींव डाली ! इस वटवृक्ष की जड़ें पाताल से गहरी व ऊँचाई ब्रह्माण्ड से भी ऊँची रखी ! कालान्तर में उस वटवृक्ष की जड़ें शिखर छूने लगी व उस वट वृक्ष ने एक विशालतम रूप धारण कर लिया जिसमें असंख्य फल पकने की तैयारी में थे ! ऐसे कई फल जैसे- स्वामी गुरुमुखदास जी, स्वामी ग्वालानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी, स्वामी शान्तिप्रकाश जी, स्वामी बसन्तराम जी, स्वामी चन्दनराम जी, स्वामी उधवदास जी, स्वामी जीवनमुक्त जी सरीखे पक चुके फल अमरत्व को प्राप्त हुए !

इस **श्री प्रेम प्रकाश मण्डल** के वटवृक्ष की जड़ें सूखने वाली नहीं सदैव हरी-भरी रहेंगी ! जब तक सूरज में तेज, चंदा में चमक, गंगा-यमुना की धारा बहती रहेगी तब तक **"प्रेम प्रकाश पंथ"** का नाम सदैव उज्ज्वल व कायम रहेगा !

इस महान युगपुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने पुरुषोत्तम मास सम्वत् 1999 शनिवार के दिन इस पंचभौतिक शरीर को त्याग करके उस शिव स्वरूप में समाहित हो अनंत में जा विलीन हुए ! इस अवसर पर स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, समस्त देवलोक, पाताललोक, गंधर्वलोक व समस्त भूमण्डल व समस्त देव गंधर्व किन्नर पंथ व समस्त मानव जाति के मुख में बस एक ही वाक्य था ! **''श्री गुरुदेव भगवान''** आपकी जय हो-जय हो-जय हो !, युगपुरुष महायोगी ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को शत् - शत् नमन ..... कोटि-कोटि वन्दन .....

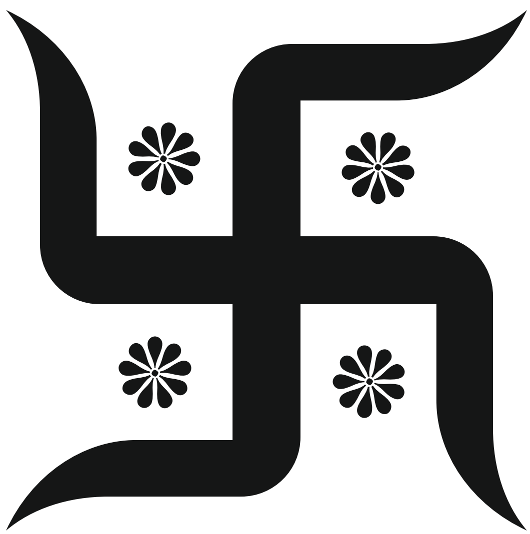

आचार्यश्री के अवतरण की कथा

सत्पुरुषों एवं महाभागवतों की पुण्यभूमि सिंध देश के हैदराबाद जिले के अन्तर्गत, सुरम्य सिन्धुसर के पावन तट पर सुहावने मैदानों के बीच खण्डू ग्राम है, उस गाँव में भक्त चेलाराम जी एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती कृष्णादेवी जी संतसेवी व भक्तिपरायण दम्पति रहते थे ! इनकी विशेषता यही थी कि सदैव अपने घर में सत्संग, भजन-कीर्तन करना व साधु-संतों की सेवा आदि करना, व अतिथियों का सत्कार करना ! मानों यह उनकी दैनिक दिनचर्या थी !

एक बार ऋषिकेश से एक संत मण्डली भ्रमण करते हुए सिंध देश के खण्डू ग्राम में आ पहुँची ! भक्त श्रेष्ठ श्री चेलाराम जी संत मण्डली का दर्शन कर अत्यंत गद्गद हुए ! तत्पश्चात् उन्होंने, संतों से हार्दिक प्रार्थना कर अपने घर में पधारने का निवेदन किया ! संतों ने उनका निवदेन स्वीकार कर घर में पधारे ! श्री चेलाराम जी व उनकी भक्तिमती कृष्णादेवी जी अब नित्य संतों की खूब श्रद्धापूर्वक सेवा में जुट गये !

संतों का नित्य प्रातःकाल व सायंकाल घर में ही कथा-कीर्तन भजन आयोजन रहता था ! एक दिन माता कृष्णादेवी कथा में मग्न होकर बैठी हुई थी कि सहसा उनका चित्त महापुरुषों की ओर एकटक हो गया, उन्हें देखकर मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं- हे प्रभु ! यह आपकी दासी आपसे करबद्ध विनय करती है कि इन जैसे योगी पुरुष मेरे आँगन में पुत्ररूप में अवतरित हों ! जैसे हमारा जीवन कृत्य कृत्य हो जाये ! मन में ऐसा ''**शिव संकल्प**'' करके सत्संग समाप्ति के बाद माता कृष्णादेवी ने महात्माओं से प्रार्थना की- हे भगवन् ! आज मेरी ओर से ईश्वर से अरदास करें कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो !

सत्पुरुषों ने माता से कहा- हे देवी ! आपका शुभ संकल्प सिद्ध हो, आज हम प्रभु से यही याचना करते हैं -

रात्रि के समय माता को पुनः विचार आया कि सुना है कि ईश्वर तप के द्वारा प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की श्रेष्ठ मनोकामना पूर्ण करते हैं ! क्यों न मैं भी ऐसी तपस्या करूं? ऐसा दृढ़ विश्वास रखकर, प्रातःकाल पतिदेव से आज्ञा लेकर चालीहा महाव्रत का निश्चय किया और व्रत प्रारम्भ हुआ, व्रत के नियमों का माता ने बखूबी पालन किया ! आठों पहर में केवल एक ही बार थोड़ा सा फलाहार लेती थी फिर सारा समय ईश्वर के चिंतन, ध्यान व भजन में व्यतीत करतीं !

ऐसा कठोर तप करते करते, ज्यूं ही चालीस दिन सम्पन्न हुए त्यों ही अर्धरात्रि में माता को एक स्वप्न आया– "हे कल्याणि ! हम आपकी तपस्या से अति प्रसन्न हुए हैं और अब तुम्हारा शुभ संकल्प भी शीघ्र ही पूर्ण होने वाला है !"

यह सुनकर माता कृष्णादेवी अत्यंत प्रसन्न हुई, हृदय में आनन्द का समुद्र प्रवाहित हो गया ! चेहरे पर चमक सी आ गयी ! खुशी में फूले नहीं समा रही थी ! अनेक आनन्द की तरंगे हिलोरें मार रही थी ! इकतालीसवें दिन प्रातः 7 बजे व्रत का पारायण हुआ !

इसके कुछ ही समय बाद विक्रम संवत् 1944 आषाढ़ पक्ष की सिन्धी चार तारीख तद्नुसार शुक्ल पक्ष की षष्ठ तिथि शनिवार के पावन दिवस प्रभात वेला जगत् के उद्धार करने हेतु परम **''भगवद् शिवस्वरूप आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज''** का खण्डू गाँव में अवतरण हुआ !

इस प्रकार सारा जहान पूज्या माता कृष्णादेवी जी का एहसानमंद है जिनकी महान् तपस्या, ईश्वरचिन्तन एवं प्रभु भक्ति के फलस्वरूप ही हमें ऐसे कामिल योगी महापुरुष गुरुदेव की प्राप्ति हुई, जिनकी पावन छत्रछाया में असंख्य जीवों का कल्याण हुआ और वे मोक्षपद के अधिकारी बने !

ऐसे आचार्य युगपुरुष युगदृष्टा सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं धर्ममयी माता कृष्णा के पावन श्रीचरणों में हम शत् शत् प्रणाम हैं !

!! ॐ श्री सत्नाम साक्षी !!

राजस्थानी भाषा में

1008 आचार्याधीश श्री टेऊँ राम चरित

मंगलाचरण

दोहा : वंदऊं हरि लछ पदम पद, मात पिता जग जात। तिमिर तिरोहित जन हृदय, कर आलोक प्रभात।।
मेघवर्ण रवि मुख हरी, शीश मुकट गल हार। मुख तन अँखि छवि पदम पद, लछ नम बारम्बार।।

1. मैं इस ब्रह्माण्ड में जन्म लेने वाले चर अचर जीवों के माता पिता प्रातः वन्दनीय श्री विष्णु के चरण कमलों की वन्दना करता हूँ. वे जन–जन के अंधकार (अज्ञान) का हरण कर उनके जीवन में नये प्रभात का सूर्योदय लायें !

2. भगवान विष्णु मेघवर्ण वाले सूर्य के समान जिनका मुख देदीप्यमान है जिनके शीश पर मुकट एवं गले में हार सुशोभित है एवं माँ भगवती लक्ष्मी, जो पद्म छवि वाली है जिनका मुख आँख और तन पद्म वर्ण सुशोभित हो रहा है ऐसे भुवनपति विष्णु भगवान एवं माँ लक्ष्मी के चरण कमलों की मैं बार–बार वन्दना करता हूँ !

दोहा : विघ्न हरण मंगल करण, वंदन देव गणेश।
टेऊँ विरुद वखाण मूं, अवतर जग दरवेश।।

!! चौपाई !!

सिंध धरा मंजुल महतारी। संत ख्यात ख्याती बड़ भारी।।
खंडू गाँव सुंदर शुचि सोवे, सुर नर किन्नर मनड़ो मोवे।।
चेलाराम भगत भगवाना। अहनिस राम नाम रत ध्याना।।
सजवत पतिव्रत कृष्णा नारी। भगती भगवत प्रतिदिन भारी।।
सत संगत पुनि साधू सेवा। चेला राम मुगति फल मेवा।।
इष्ट देव अरपण फल फूला। अरचण कृष्णा जग तर मूला।।

ऋषीकेश साधू पुर बारा। वींण तार झंकृत हिंय तारा।।
कोइल कूंक पपीहा पीहा। मुग्ध मोर जन अमरस पीहा।।
कृष्णा भाव सुवन इण जैसा। अंक सरित फुल पदमा जैसा।।
चव दस दिन लग तप कर भारी। अभिलासा पूरण हरि आरी।।

दोहाः तुझ तप से मैं प्रसन्न बड़, इच्छा पूरण जान।
सुत सूंसत समान शुभ, सकल गुणों की खान।।

!! चौपाई !!

मास असाढ़ सेत पख प्यारा। ब्रह्म मूहरत दिन शनिवारा।।
कृष्णा गर्भ रतन अवतारा। चहु दिस में ऊजल उजियारा।।
अष्ट गगन सिंधु सत निरते। विहग वृंद मधु रव मनु किरते।।
मंद मधुर अमरत जल वरसा। खंडू ग्राम जन गण सब हरसा।।
राम नाम नवजात उच्चारा। पुरजन परिजन भव सर पारा।।
टेऊँराम सेव जग सारा। हिंरद हार वन पुर जन प्यारा।।
परम हँस हिंय सर में वासा। ब्रह्म बाग हिंय सिसु फुल वासा।।
हिंरद पटल उगड़ी हरि रेखा। भाग पटल हरसित मुनि देखा।।

दोहाः मुकट मणी संतन सुवन, मुनी मणी कुल वंस।
परम हंस चिति मानसर, टेऊँ चिन्मय अंस।।

!! चौपाई !!

शुक सा बालक बड़ ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञान चर्चा मित मानी।।
बाल कुटी रचना सब साथी। ध्यान लीन हरि में दिनराती।।
वन वागा तरुतल हरि ध्यानी। मधुर वचन पिक सा हरि बानी।।
कंठ कलित कै कोइल कूके। अमिय मेघ खंडू गर टूके।।
सामज्ञान दीपक जुप जानी। गरू कह पाठ वे वस वानी।।
पोथी ब्रह्म ज्ञान मन माना। हिंरदे हार हरि हर बाना।।

राम नाम को कल्प बिताना। कल्प वेल सत संगत ध्याना।।
धन्य धन्य कृष्णा मा मानी। पुण्य फलित चेला जग जानी।।

दोहाः बाला पण में सिसु ऋषी, हरियल हिय पितु मात।
बीजांकुर भगती हरित, बूंटा सत लहरात।।

!! चौपाई !!

बाल खेल सिंधू वर कूला। जल में वह खिल्लू तृण मूला।।
हाहाकार मचहु तहं भारी। टेऊँ कूद जल सर बतियारी।।
खिल्लू फूल सरित तट लाया। परचो प्रथम जगत तह पाया।।
जाचक जिंसा बिन पण हाटा। बिना लाभ चीजा तुल काटा।।
टहल रीस जाँचइ धन दूणा। परचो मात भ्रात मिल धूणा।।
टहल रीस बागा फल फूला। दुगुण लाभ मनड़ो बड़ फूला।।
संत संगत खेता सुख सारी। लड़ालूंन आंबा खग खारी।।
संगत जाग तोड़ खल खारा। जिलाधीश चिनवा खल हारा।।

दोहाः सिद्ध पशू बलि देवता, गाँव सु ठोढ़नि माय।
गुरू शब्द सुण प्रण सकल, पशु वध अब कुइ नाय।।

!! चौपाई !!

सालारे खंडू में भारी। शाह भिट्ट सत संगत सारी।।
रेला भजन सुणब नर नारी। चहुं दिस टेऊँ जय जय कारी।।
प्रेम प्रकाश मंडल थप ताई। जस वासा जग में प्रसराई।।
गमण कराची पुर लरकाना। फिरि फिरि जोड़इ सब जन जाना।।
शिष्य बने लाखों नर नारी। धरम ध्वजा अंबर फहराई।।
धर्म टेक भेद न तह नेकू। जैन बोध हिंदू सब एकू।।
एकर ग्राम खंडू के माई। श्वान वृद्धा घर अग मर जाई।।
हरिजन नेक न टेऊँ नेका। श्वान जीव पुनि मंत्रन फूका।।

दोहाः तीसा वरसा टेऊँ जी, जन्म स्थान कू त्याग।
संत मंडली साथ ले, टंडे आदम भाग।।
शिष्य मंडली साथ ले, शिव मंदिर में वास।
पूजारी झगड़ो कियो, दूरा देश उजास।।

!! अमरापुर स्थापना !!

दक्षिण दिश में गमण सुस्वामी। वन सुंदर पेखहु बड़ नामी।।
शाल शमी अरु कदमा कुंजा। वेल लिपट जूही फुल सज्जा।।
आश्रम सुंदर वहं बड़ थापी। टेऊँराम ब्रह्म जगती व्यापी।।
कुटिया सुंदर तहाँ रचाई। बाँस बल्ला पर कुश त्रण छाई।।
सुंदर बाग लगायो ताही। फूल विगस अलि दल मंडराही।।
पंछी कल कल वंशी वीणा। अपसर गीत गाव मनु झीणा।।
ब्रह्मज्ञान चर्चा नित ज्ञानी। सत संगत भजना मधु वाणी।।
टेऊँराम शब्दा रस मेहा। अमर सदन कुटिया घर गेहा।।
अमरापुर चर्चा जग भारी। दर्शन हित आवे नर नारी।।

दोहा : देखा देखी जल गया, अमरापुर किह नाश।
प्रभ मंडल कुटिया मनु, चारूं मेर उजास।।
कूप सूख जल तहँ नहीं, चिंता सकल सताय।
गुरु मंत्रन जल छिटकता, कूआं जल भर जाय।।
सभा भौन मणि भव्य तहँ मंजुल मंजु विशाल।
सत संगत तहँ अहनिशा सांझ सुबह मधुराल।।
दूर दूर सूं संत तह, भजन करण हित आय।
नाम कमायो अमरापुर, दुश्मन हियो जलाय।।

!! चौपाई !!

टंडाआदम हाको भारी। राम कृष्ण माने नहीं यारी।।
निंदादेव पुजारी याई। धर्म सनातन करइ बुराई।।

खल दल चर्चा घर घर जारी। दुगुण नाम अमरापुर प्यारी।।
हियो विशाल टेऊँ महाराजा। धर्म पुंज धर्मन सिर ताजा।।
गौमुख नीसर शब्दा गंगा। अध्यातम मानुष सब रंगा।।
ठाठ बाठ अमरापुर भारी। देव सभा जाणग यह आरी।।
खल जन सब ऐकठ हुई जाई। तहसीलदार कू जाय भूंडाई।।
तहसीलदार देखन तहँ आया। स्वामी जी को शीश नवाया।।
शिकायत तब सब खल जाई। कलेक्टर कू बात बताई।।
शासन दीन कुटी सब बालो। साधू संत गर्व सब गालो।।

दोहाः **खल कामा पामी सकल, आश्रम दीन जलाय।**
संत सकल दुख भर हिले, गुरुवर असर न काय।।
बोर झाड़ आँगन उसी, आसन दीन लगाय।
ध्यान कियो भगवंत को, मति फेरी खल जाय।।

!! चौपाई !!

अफसर आयो आगम पाई। मिनख रूप हरि जाणग आई।।
आकर स्वामी कीन प्रणामा। कीन प्रणाम शीश नम वामा।।
पूछै आश्रम कौन जलाया, उत्तर गुरु तुझ दास जलाया।।
जिलाधीश बदली करी भाया। कलेक्टर तहँ नया लगाया।।
आश्रम पाछ चिनायो भारी। राज काज खरचो सुख सारी।।
आनन्द मंगल चहुं दिश माई। चमत्कार लख सब हरसाई।।
भव्य भवन रच सुंदर वागा। तर सुन्दर बेला रस रागा।।
भजन दुगुण होवण वह लागा। गुरु पूजन सगला महभागा।।

दोहाः **फूल वास जिम सब जगह, ख्यात टेऊँ सब ठोर।**
जाणग सिंध प्रदेश में, नव रवि ऊगो भोर।।

!! चौपाई !!

ठोर ठोर स्वामीजी जावे। दरसन हित नर नारी आवे।।
सीख देय सब को महतारी। ब्रह्म ज्ञान चर्चा कर भारी।।
पूर्ण प्रभाव गुरुवर भासा। जन जन शिष्य भणै सुख खासा।।
दर्श टेऊँ मनु दर्शन रामा। अवतर इस घर के घनश्यामा।।
शिष्य जान देवत मनुआया। आकर सबकू दरस दिराया।।
सत संगत हुय सांझ सकारी। शाचिपति अमजल आय भरारी।।
गुर्जर धम गम गमन सुदिल्ली। तिमिर अज्ञान न टूटी झिल्ली।।
बाद गमण सुरवन पंजाबा। ब्रह्म ज्ञान ऊजल उस आभा।।
कश्मीर गमणहु या बड़ ख्याती। राजस्थान आ दिय हरि पाती।।

दोहाः सिंध सरित पारा हिका, नद में आय उफान।
डगमग नावा करण लग, भय कंपित सब ज्ञान।।
लेय कमंडल से सलिल, कीनइ मंत्रपूत।
जल छाटा छिटकत पलक, अंधड़ जल सब सूत।।
सत्‌नाम साक्षी शब्द निज, मूल मंत्र गुरु ज्ञान।
एक दूज मिलते समय, याही मंत्र मुखान।।

!! चौपाई !!

एक सूत्र मणिया जिम माला। सकल साथ रहना हरि व्हाला।।
पापी साथ पा नहीं काई। बहकावा में भूल न आई।।
धर्म लक्ष्य सब भगवत पाना। झगड़ा पंथ भूल सब जाना।।
सकल धर्म अच्छा सुण भाई। किसी धर्म की नहीं बुराई।।
पीड़ा पशु वध मांस न खाना। मद्य पान नह दुर्जन जाना।।
घात नहीं मित सत्य व्यवहारा। छल ठग कपट निकट नह प्यारा।।
मधु बोल सब प्रेमी जानो। जीव प्यार जीवन उन जानो।।
क्षमा करो अर शास्त्र सुज्ञाना। अन्न क्षेत्र सब ठोर खुलाना।।

दोहाः नहीं किसी दुख देवना, नहीं सताना कोय।
पर पीड़ित सेवा सदा, धर्म न इण वद कोय।।

श्वेत वेश जब्बा सित धारी। देव दूत इण घर अवतारी।।
राम नाम मुख रवि मनु जाना। ब्रह्म ज्ञान आलोक पिछाना।।
ज्ञान किरण छन छन कर आना। वेद पुंज के नवतन माना।।
ध्यान लीन जोगीश्वर सीसा। दरस लोग सीधा जगदीशा।।
आचार्य प्रवर टेऊँ जी काई। सुर नर ऋषि मुनि शीश नवाई।।
मंद मंद मुस्कावे मानो। नवल मेघ फूला जड़ जानो।।
मंच मंजु सोभे शुभ स्वामी। सुरगुर आव मोव मनु नामी।।
हनुवंत किंकर विड़द वरवाना। विड़द सिंधु टेऊँ जी माना।।

!! स्वर्गारोहण !!

दोहा : काल एक दिन आवियो, लेग अमर पुर माय।
अमरापुर बो अमरापुर, टेऊ सुरग सजाय।।

गुन्नीसो निनानवा, शुक्ल पक्ष शुभ साँस। स्वामी टेऊँराम जी, सुरगापुर सत बास।।
आश्रय प्रेम प्रकाश वो, धन्य धन्य शुभ भाग। सिंध सु हैदराबाद में, स्वामी उण घर राग।।
शनीवार था जनम दिन, शनीवार नस देह। स्वामी टेऊँराम जी, ब्रह्म सुपथ शुभ गेह।।
लख नर नारी अंतदन, दरस अश्रु, अँखि झार। अंतवेल निज हिय गुरू, वंदन बारंबार।।
गादीपत तह होविया, स्वामी सर्वानन्द। बही बयार मंगल मधुर चार दिशा आनन्द।।
सर्वानन्द जु बाद में सोम्या सुरगा धाम। गादीपत होया तदे शान्ति प्रकाश सुधाम।।
प्रज्ञा चक्षु शान्ति जी हिरदे होय उजास। ब्रह्म ज्ञान विदवत सुबल, गुरुवर शब्दा भास।।
सोलह शिक्षा टेऊँ जी, मानख सिरजण साँच। हनुवंत किंकर किह शब्द, ब्रह्म रेख हिय रांच।

!! जयपुर अमरापुर का कवित !!

कवित : 1

पावन पुनीत अमरापुर जेपुर।
इंदर की राज सभा आय ओप जानिए।।
धनपत धानी धन सदन कुबेर गिन।
भव्य भौन ऐसो नहीं जगत में जानिए।।
कंचन कलश तिन, रवि उग आयो दिन।
भगवा ध्वजा खग उड़, चांद छबि छानिए।।
कह लो किंकर लिह, भव्यता को भव्य गेह।
युहप विमान धर, मणि मड़ मानिए।।

कवित : 2

गुलाबी शहर इण गुलाब सुमन शुभ।
अमरापुरा जु महल, शची भौन जानिए।।
विष्णु वसे है वास, लिछमी को साथ हास।
कंचन विलास लास, हेम हंस हालिए।।
फटिक शिला सो बन सेत सोन रास रास।
टेऊँजी मंदिर माना ब्रह्म मणि मानिए।।
किंकर कह लो लिख, कैलाश मंदिर केधो।
बिरम मंदिर केधो जैपर में जानिए।।

दोहाः गादीपत हरिदास जी, जाणग ब्रह्मानन्द। मंगल गोद ज चार दिस, जाणग परमानन्द।।
स्वामी भगत प्रकाश जी, गादीपत सब साज। पुहमी पत सब संत जन, थाप ज रामहू राज।।

हनुमन्त किंकर
जोधपुर (राज.)

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)